मानव मन्दिर

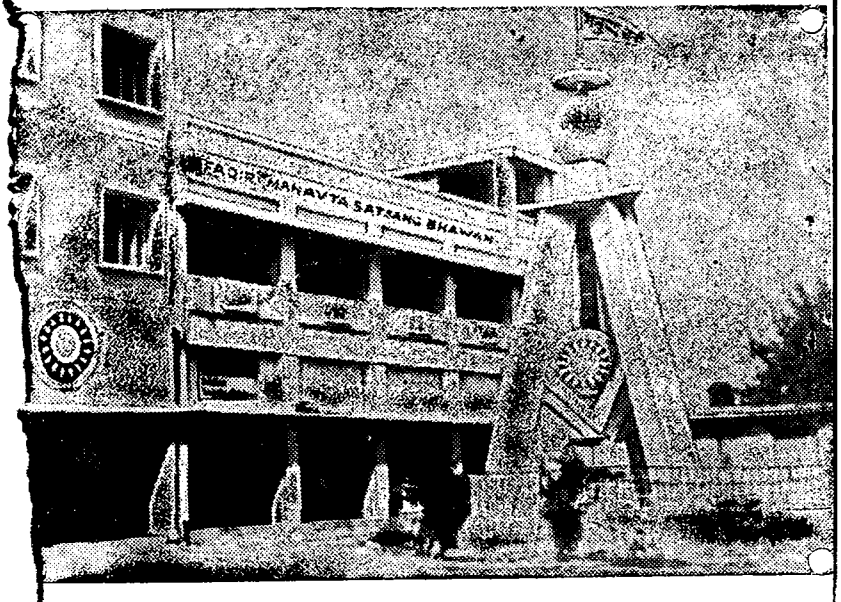

फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट

सुतेहरी रोड, होशियारपुर

FORM I

(See Rule 8)

Place of Publication	Hoshiarpur
Date of Publication	10th of every month
Periodicity of Publication	Monthly
Printer's Name	Dr. Paras Ram Aggarwal
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir. Hoshiarpur
Editor's Neme	Dr. Paras Ram Aggarwal
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Sutehri Road, Hoshiarpur.
Name and address of individuals, who own the Manav Mandir of partners of shareholders, holding more than one Percent of the total capital	- Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

I Dr. Paras Ram Aggarwal hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Dated : 10-12-84 Signature of Publisher

Printed and Published by : Dr. Paras Ram at

Shiv Dev Rao Press. Manavta Mandir Hoshirapur.

for the Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

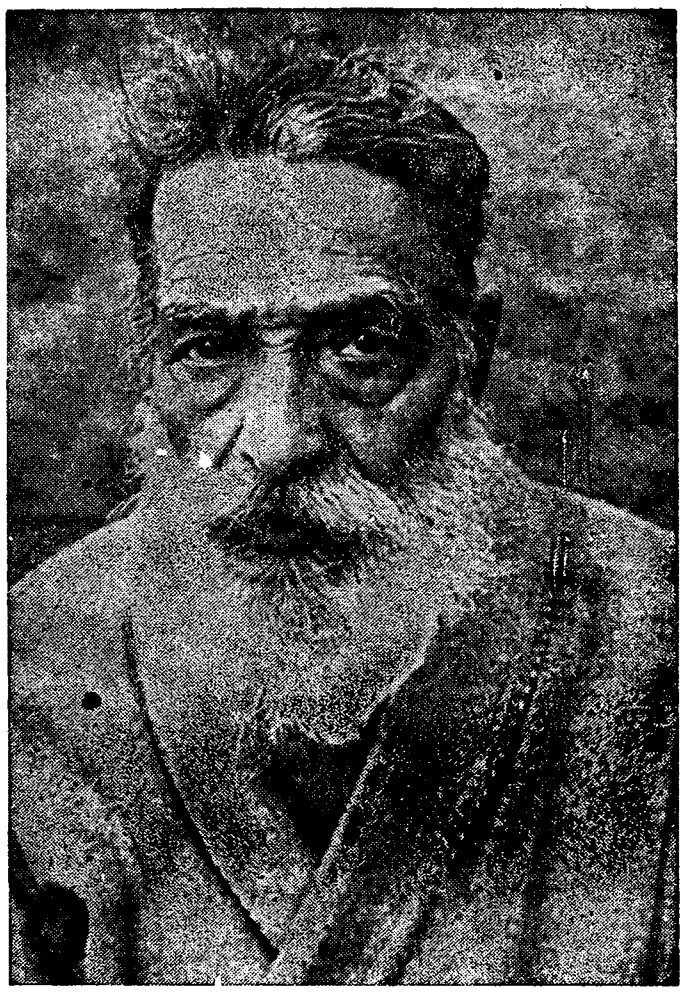

Param Sant Param Dayal Faqir Chand Ji Maharaj

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

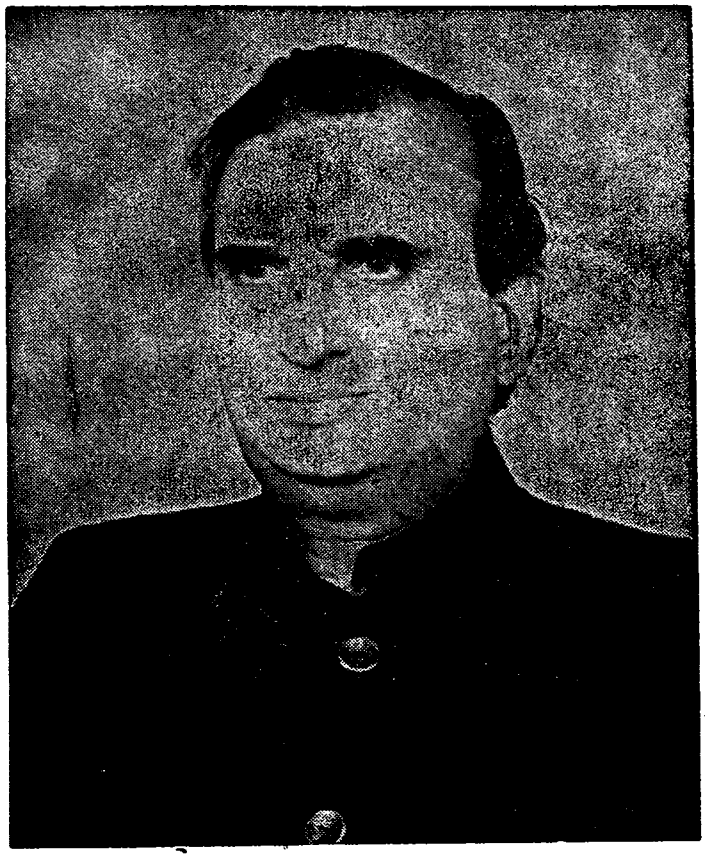

Param Sant Manav Dayal Dr. I.C. Sharma Ji Maharaj

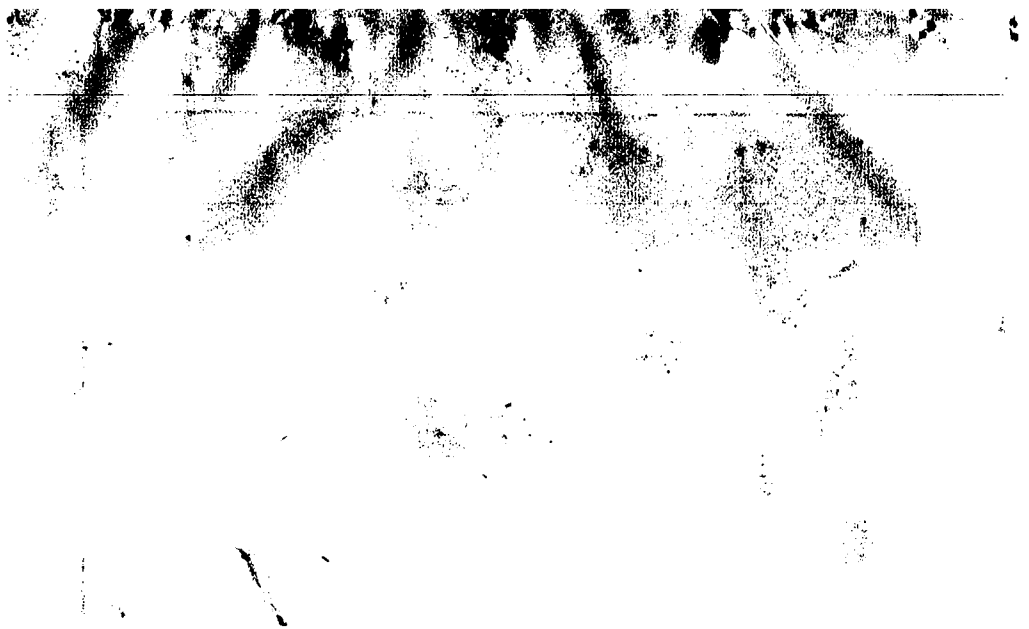

मासिक—

मानव मन्दिर

BE MAN
मनुष्य बनो

सम्पादक :
डा० परस राम अग्रवाल

| वर्ष 11 | सोमवार 10 दिसम्बर 1984 | संख्या 8 |

सत्संग परमसन्त पूर्णधनी मालिकेकुल हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज

10-3-1930

अपनी दौलत को बढ़ाओ

लेना हो सो जल्द ले कही सुनो मत मान।
कही सुनी युग युग चले आवागमन बंधान॥
लेना हो सो जल्द ले अगमा पाई देह।
आगे हाट न बाणिया लेना हो सो लें॥
लेना हो सो जल्द ले वाद विवाद को छोड़।
लेने को चित दे सदा बातों से मुँह मोड़॥

मुन्नी, ठाकुर हनुमान सिंह साहिब की लड़की है। उसकी उमर 2½ साल या इससे कुछ ज़्यादा होगी। छः-सात महीने हुए जब मैं जलन्दो में आया था। मैंने उस लड़की को अपनी ओर लगाना चाहा परन्तु वह उस वक़्त मेरी तरफ नहीं आती थी और मुझसे दूर भागती थी। इस बार जब मैं आया तो वह स्वयं मेरी आँखों को देखकर मेरे पास आई। मैंने पूछा, तू कौन है? उसने कहा—मैं मुन्नी हूँ।

मैंने फिर पूछा—मुन्नी कहाँ रहती है? उसने अपने अंगठे के पास की उंगली सीने के बीच में रखकर जवाब दिया—"मुन्नी यहाँ रहती है"। मैं उसका जवाब सुनकर हैरान रह गया। मेरे दिल में तरह-तरह के विचार आये कि क्या कारण है कि पहले मुन्नी मेरी तरफ नहीं आती थी और अब वह मेरे बिना बुलाये हुए मेरे पास दौड़ी चली आई। आज मुझे यहाँ आये हुए दूसरा दिन है। वह घूम-फिर कर मेरे ही पास रहती है। मैं उसे देखकर खुश होता हूँ और वह मुझे देखकर खुश होती है।

यह दो बातें हैं जिन पर इस समय विचार करना है।

पहले जब मुन्नी मेरे पास नहीं आती थी तो उसका कारण यह था कि प्रकृति से अलग होने या इस दुनिया में पैदा होने के कारण उसके अन्दर एहतियात की ज़ोरदार ताक़त मौजूद थी। इस एहतियात में तीन बातें होती हैं :—

१. शर्म २. दुचिताई ३. भय। ये बातें बच्चों में आम होती हैं और जानवरों में भी। अविश्वास इस बात का होता है कि यह आदमी जो मुझको अपने पास बुला रहा है विश्वास करने के योग्य है या नहीं और शर्म इस बात की होती है कि मैं किस हद तक इसका विश्वास करूँ तथा भय इस बात का होता है कि यह अजनबी व्यक्ति है, इससे बचकर रहना ही अच्छा है।

दिल मिलने की बात है। जब तक दिल नहीं मिलता उस समय तक दोनों में समानता नहीं आती और इसकी आवश्यकता भी है। हम लोगों को भी हर प्रकार के कारोबार में एहतियात के इस क़ुदरती जज़बे से काम लेने की आवश्यकता है। यह कोई ऐब की बात नहीं है बल्कि अपनी रक्षा का बच्चों के अन्दर एक विश्वसनीय शस्त्र है

चूँकि अभी तक मन की पूरी तरह घड़त नहीं हुई है इसलिए इसका खेल सादगी के साथ हुआ करता है और जब इसकी घड़त हो जाती है तो उस समय यह बहुत सुन्दर चीज़ हो जाती है। जो लोग इस जज़्बे को अपने अन्दर पैदा करने लगते हैं और अपने अनुभव से काम लेते हुए उसे निखारते रहते हैं वह संसार में सांसारिक दृष्टि से बहुत बड़े आदमी हो जाते हैं उनके सारे काम जचे-तुले हुए होते हैं। नौजवानों को विशेषकर इससे सख्त काम लेने की आवश्यकता है।

जो लोग इस जज़्बे को नहीं उभारते वह गुमराही के गढ़े में गिरकर एहतियात की इस शक्ल की पाप की आदत बना लेते हैं। बच्चों के अन्दर यह एहतियात सराहनीय है और बालिग आदमियों के अन्दर अगर उनका सफाई नहीं होती तो यही पाप बन जाते हैं। पाप की तीन किस्में हैं:—

१. लज्जा २. दुचिताई और ३. भय

पहले प्रश्न का उत्तर तो मैंने दे दिया। अब दूसरा प्रश्न रह गया कि मुन्नी स्वयं क्यों मेरी ओर आई और अपने साथियों को छोड़कर मेरे साथ रहने लगी? इसका जवाब यह है कि उसने अपने दिल और आँख से इस बात को जान लिया कि यह व्यक्ति विश्वसनीय है।

तुम समझते हो कि बच्चे ज्यों ही खेल-कूद में अपना समय गँवाते हैं यह ख़्याल ग़लत है। बच्चे तो अपनी छुपी हुई और दबी हुई ताक़त के उभारने की फिकर में रहते हैं और उनका जितना काम होता है उस सब का उद्देश्य केवल शक्तिशाली बनना है। यह काम उसी तरह से किया जाता है जिस तरह बुद्धिमान् व्यापारी थोड़ी राशि रखते हुए भी लेन-देन के कारोबार में अपनी दौलत बढ़ाने लगता है और आखिर में धनी हो जाता है। इससे तो तुमको कभी

इन्कार ही न होना चाहिए कि जो कुछ बच्चे को बनना है वह उसमें पहले से ही मौजूद है। दुनिया की कोई ताक़त ऐसी नहीं है जो इन्सानी बच्चे के दिल के अन्दर मौजूद न हो। हाँ, अवसर और अनुकूल साधन मिलने की आवश्यकता होती है।

बच्चा जब पैदा होता है तो खाट पर पड़ा हुआ अपने हाथ-पाँव को इस तरह से हरकत देता रहता है जिस तरह पहलवान कसरत करता है। उसका हर समय हाथ-पाँव मारते रहना इस ग़रज़ से है।

जब थोड़ी ताक़त आई तो बच्चा उठने, बैठने का इच्छुक होता है, गिरता है, पड़ता है, ठोकरें खाता है। गिरते ही रो देता है। यह रोना इसलिए है कि उसे अपनी कमज़ोरी का उस समय अफ़सोस हुआ। अगर तुम किसी बच्चे को गिरते हुए देखो तो भूलकर भी उसके साथ हमदर्दी न करो और न ही तुम्हारी ज़ुबान से अफ़सोस का कोई शब्द निकले। तुम बच्चे की तरफ से अपनी आँख दूसरी तरफ फेर लो और ऐसी शक्ल बनाओ कि बच्चे को मालूम न होने पाये कि तुमने उसे गिरते हुए देख लिया है। बच्चा फिर दोबारा कोशिश करके खड़ा होने की हिम्मत करेगा और ज़ोर लगाकर खड़ा हो जायेगा। अगर तुमने भूलकर अफ़सोस ज़ाहिर किया तो अनजाने में बच्चे की उभरती हुई ताक़त को धक्का देकर नीचे गिरा दिया। इस बारे में तुमको सावधान रहने की आवश्यकता है। बच्चे को गिरने-पड़ने दो। खिलखिलाकर हँसने और रोने दो। अपने पाँव पर उसे खड़ा होने दो। तुम सिर्फ़ उसके साथ ज़रूरी हमदर्दी और मुहब्बत का सलूक करो ताकि उसकी ताक़त को ज़्यादा उभरने का मौक़ा मिलता जाये।

कर सकते।

मानवीय जीवन में दर्जे होते हैं। हर दर्जे में परीक्षाएँ और आजमाइशें पेश आती हैं। और जब तक यह जीवन सम्पूर्ण नहीं हो जाता तब तक यह हाथापाई बराबर बनी रहती है। यह न समझो कि किसी बूढ़े ने अपना जीवन पूरा कर लिया। नहीं! उसको आगे चलकर फिर नई परिस्थितियों से गुज़रना पड़ेगा। अगर उसने अपनी दिली ताक़तों को उभार कर नेकी का सरमाया इकट्ठा कर लिया है तो फिर वह नया चोला बदल कर उसका व्यवहार करेगा और जिसने बदी का सरमाया इकट्ठा किया है उसको मुसीबत और तकलीफ़ की हालतों से गुज़रते हुए अपनी बुराइयों को धोने की ज़रूरत पड़ेगी। जब यह सब दूर हो जायेंगी तब फिर नये सिरे से उसे नेक कमाई करनी पडेगी और जब वह हर तरह से नेक बन जायेगा उस वक़्त उसका जीवन पूर्णता में आयेगा और उस समय उसे जीवन के असली उद्देश्य का पता चलेगा, इससे पहले यह सम्भव नहीं।

मैंने तुमको बता दिया कि छोटे बच्चे में क़ुदरत की सभी शक्तियाँ पहले से ही मौजूद रहती हैं। नेकी उनको उभारती है, बदी उनको दबाती रहती है। लेकिन ज़िन्दगी दोनों से गुज़रती हुई चली जा रही है।

एक अंग्रेज़ी शायर ने लिखा है :—

Child is the father of man. यानि बचपन की अवस्था मानवीय जीवन का पिता है। बच्चे के पेट से बूढ़ा पैदा होता है। जो शख्स बच्चा होता है वही बूढ़ा होगा। तुम अपने असली जीवन के उद्देश्य को पूरा करने में लग जाओ। कमज़ोरियों, पापों और गुनाहों को परे फेंकते चलो। नेकी और पुण्य को अपना साथी बनाते रहो ताकि तुम्हारा

जीवन खुल खेले। तुमको यह भी याद रहे कि पाप और पुण्य में से कोई भी तुम्हारे जीवन का उद्देश्य नहीं है। दुःख और सुख में से कोई भी असली चीज़ नहीं है। हाँ, पहले पापों और दुःखों से बचो। नेक हो जाओ। फिर यह नेकी और बदी दोनों ही तुमसे जुदा हो जायेंगी और तुम असली इन्सान हो जाओगे।

Not enjoyment and not sorrow,
Is our distined end or way.
But to act that each tomorrow,
Finds us farther than today.

तुम जीवन के मैदान में आये हो, आओ, यह आना तुमको मुबारिक हो। परिश्रम की हालतों से गुज़रो। औरों की तरफ न देखो बल्कि अपनी तरफ देखो। पहले अपनी तरफ देखकर तब दूसरे को तरफ देखो।

मैंने मुन्नी को पान खिलाया, फल दिये और मिठाई दी। फिर मुन्नी से कहा कि तुम पान, फल और मिठाई दूसरों को बाँट दो और उसने बाँट दिये। अगर उसे चीज़ पहले न मिली होती तो वह दूसरों को कभी न देती। इसवास्ते कहा गया है "पहले आत्मा फिर परमात्मा, पहले घर का चिराग़ जले, फिर मन्दिर में जाकर जलाओ, पहले स्वयं नहा लो तब देवता को नहलाओ"। यही छोटी-२ बातें हैं जो तुम इस छोटी-सी मुन्नी के व्यवहार से सीख सकते हो।

तुम्हें विद्या प्राप्त हो गई चाहे वह विद्या किसी भी दर्जे की हो इस पर बहस नहीं। तुम उस विद्या को दूसरों में भी फैला दो। यानि विद्या का दान दो। तुमको इज़्ज़त मिल गई। तुम इज़्ज़त वाले बन गये। इज़्ज़त पाकर तुम

दूसरों को इज़्ज़त दो ताकि तुम्हारी इज़्ज़त बढ़ती चले। अगर तुम इज़्ज़त पाकर दूसरों को बेइज़्ज़त करोगे तो ऐसी बेइज़्ज़ती का दुःख पाओगे जिसका कोई ठौर-ठिकाना न रहेगा। तुमको दौलत मिल गई चाहे वह दौलत किसी मात्रा में हो। अब तुम्हें चाहिए कि उस दौलत के सम्मान को अपने इर्द-गिर्द बखेरो। दान दो ताकि तुम्हारी दौलत की खूबसूरती बढ़े और अगर तुम कंजूस बन गये तो फिर यही दौलत तुम्हारे लिए अफ़सोस का कारण बनेगी :—

कबीर लक्ष्मी सूम की देखन ही का लाड़।
जो वाँ में कौड़ी खटे तो साईं तोड़े हाड़॥

यह हालत अच्छी नहीं है क्योंकि फिर वह तुमको गढ़े में गिरा देगी। ज़िन्दगी चाहती है कि वह खुल खेले, आज़ाद हो और बन्धन की हालत में न रहे। अगर इस असूल पर चलने में किसी ने ग़लती खाई तो विद्या, इज़्ज़त, दौलत और हकूमत — दुःखदायक साबित हो जायेगी। यह छोटी-२ बातें हैं जो बच्चे के दो दिन के बर्ताव से मेरी समझ में आई हैं। इसलिए इस दुनिया में तुम यह एहतियात से अपनी दबी हुई शक्तियों को उभारो और ज़िन्दगी को पूर्ण बनाओ।

नोट :—हज़ूर दाता दयाल जी कहा करते थे :—

जो शख्स दुनिया की इच्छाओं के कीचड़ में फँसा हुआ है वो दौलतमन्द होते हुए भी मोहताज, ग़रीब और कंगाल है। लेकिन जिसका दिल दुनिया की इच्छाओं से पाक और साफ है वो फ़कीर होता हुआ भी बादशाह और सच्चा बादशाह है।

जनरल सेक्रेटरी

सत्संग परमसन्त परम दयाल
पं० फकीर चन्द जी महाराज
वेस्ट ब्रॉमविच, इंगलैण्ड
12 - 6 - 1980
फ़कीर—महिमा

मैं वह Duty पूरी करता हूँ जो यहाँ पर लिखा हुआ है :—

तू फकीर है मेरे प्यारे, सुन फ़कीर की बानी।
साधु कहें फ़कीर को भाई, साधु जग सुखदानी॥

साधु दूसरों को तथा जगत् को सुख देने वाले होते हैं :-

पर उपकारी जन हितकारी, गुरु के आज्ञाकारी।
अवगुन त्यागी गुन के ग्राही, दया भाव चितधारी॥

Saints will never overlook the mistakes and short comings of the people. उनकी ग़लतियों को दरगुज़र करते हैं। यह फ़कीर के लक्षण हैं :—

निज चित सोधें मन परबोधें, जीव दोष नहीं दृष्टि।
अपने भाव में बरतें निस दिन, करें दया की दृष्टि॥

कुछ लोग दूसरों का हित चाहते हैं। हर आदमी

भाई को भाई बनना नहीं आता है। यह सारा झगड़ा हमारे दुःखों का कारण है और कुछ नहीं :—

सरल स्वभाव रहें जग माहीं, अपना रूप सँभारें।
औरन के अवगुण नहीं देखें, दया का मर्म विचारें॥

पैदायशी फ़कीर जो होता है वह सरल स्वभाव रहता है। देखो जितने गुरु, महात्मा गद्दी पर हैं हरएक के अपने-२ फैशन हैं कोई दण्डी स्वामी हैं, किसी ने भगुए कपड़े पहने हैं। आपने मेरी पोशाक देख ली कोई मुझे कह सकता है कि मैं साधु हूँ, महात्मा हूँ या सन्त हूँ या किसी मज़हब का आदमी हूँ ? जिस तरह से तुम हो उस तरह से मैं हूँ, मेरे और आपके कपड़ों में कोई फ़र्क़ नहीं। यह टोपी भी जो मैंने सिर पर रखी है एक लड़के की है जिसके यहाँ मैं रहा था। वह बच्चा टोपी ले आया कहता है बाबा यह टोपी मैं तुमको देता हूँ, तुम अपने सिर पर रख लो। मैंने कहा अच्छा बच्चा, मैं टोपी सिर पर रखूंगा मगर होशियारपुर तक, उसके बाद मैं नहीं रखूंगा। फिर क्या करोगे ? मैंने कहा कि जिसको मेरी मर्ज़ी होगी उसको दे दूंगा। कहने लगा, अच्छा। मैंने अपनी टोपी उसको दे दी, तो मैं इस टोपी में स्वांग बना हुआ हूँ। वह कहते हैं कि सरल स्वभाव रहें, कोई पहचान न सकें कि यह क्या है ? आजकल शंकराचार्य चलते हैं चाँदी की खड़ाऊँ होती हैं, पालकियों में चलते हैं। गुरुओं के नीचे लाख-डेढ़ लाख की कार होती है। Public का पैसा है लेते आप हैं। क्या हक़ है मेरा या किसी गुरु का कि वह चेलों के पैसे को आप खायें और अपनी औलाद के लिए छोड़ जायें। स्वामी जी ने साफ लिखा है :—

शिष्य को ऐसा चाहिए, गुरु को सब कुछ दे।
गुरु को ऐसा चाहिए, शिष्य से कुछ न ले॥

इसलिए मैंने यह Be Man Temple बनाया। आप लोग चार पैसे देते हैं वहाँ ग़रीबों को तमाम Publication free है। चार हज़ार मानव मन्दिर छपता है जो मुफ्त भेजते हैं टिकट भी मुफ्त लगाते हैं, विदेशों में भी अंग्रेज़ी की किताब मुफ्त भेजते हैं, कोई पैसा नहीं लेते। अपनी मर्ज़ी से जो कोई पैसा देना चाहे वह दे दे उससे मुझे कोई इन्कार नहीं है मगर हम किताबें बिल्कुल नहीं बेचते। लड़कों से किसी किस्म की फीस नहीं लेते, दवाइयों की कीमत नहीं लेते, दवाई मुफ्त देते हैं। होम्योपैथिक की १० पैसे फीस रखी है क्योंकि अगर मुफ्त चीज़ दो तो वह परवाह नहीं करते। हम ग़रीबों के २०-२० रु० के एलोपैथिक के टीके मुफ्त लगाते हैं। एक आदमी से एक रुपया लेते हैं, पोलियो के टीके मुफ्त लगाते हैं। यह किस का काम है? यह फ़कीर का काम है। मैंने जो यह मन्दिर बनवाया है इसमें commercial basis नहीं है और न मैंने कभी किसी से मांगा। बैसाखी पर सत्संग होता है दस-बारह हज़ार आदमी बाहर से आते हैं, मैंने कभी किसी आदमी से नहीं कहा कि तू हमें चन्दा दे। कुदरत अपने आप इन्तज़ाम कर देती है, देने वाले दे जाते हैं। हमको क्या? फिर ट्रस्ट का पैसा है, दमड़ी-दमड़ी का हिसाब है, चार्टर्ड एकाउंटैण्ट रजिस्टर चैक करते हैं। जिस वक्त मर्ज़ी चाहे कमिश्नर हिसाब चैक करते हैं upto time, upto date होता है। यह फ़कीरी के लक्षण हैं :—

सुख देवें दुख हरें निरन्तर, छमा करें अपराधा।
हँसी खुशी आनन्द प्रेम गति, अगम अलेख अगाधा॥

वह हमेशा खुश रहते हैं। जिस शख्स को तुम ज़्यादा हँसते देखो, ज़्यादा कहकहा मारते देखो या ज़्यादा धाड़

मारकर रोते देखो वह फ़कीर नहीं है। मेरा दो बार इम्तिहान लिया गया। एक दफ़ा मैं दिल्ली में गया मुझे कहते हैं कि आज तुम्हारा इम्तिहान लेंगे। मैंने कहा क्या इम्तिहान लोगे? कहने लगे कहानी सुनाता हूँ जो नहीं हँसेगा वह फ़कीर होगा। वह कहानी सुनाने लगे खुद तो हँसे नहीं मैंने अपनी तरफ से बहुत जोर लगाया कि हँसू नहीं मगर हँसने से मजबूर हो गया। जब कहानी खत्म हुई तो कहने लगे कि अभी तुम सन्त नहीं बने। फिर दाता ने दूसरा इम्तिहान लिया। मैं बसरे-बगदाद गया वहाँ मैंने बीन सुनी, रोशनी देखी, बाजे सुने, बहुत कुछ सुना। मैं बड़े घमण्ड में था कि मैंने मैदान मार लिया। इत्तफाक से मैं आया मत्था टेका। कहने लगे चलो धूप में देख तुमने क्या कमाई की है। मैंने पाँच मिनट धूप में देखा, कहने लगे योगी बन गया, सिद्धि शक्ति आ गई मगर अभी फ़कीर नहीं बना, अब मेरा जितना घमण्ड था सारा चूर हो गया। मुझे सुस्त देखकर कहते हैं अच्छा कल तुम्हारा इम्तिहान लूंगा। मैंने कहा बहुत अच्छा। जब मैं होता था तो सुबह को खाना मैं बनाता था। मैंने कद्दू छीला और देगची आग पर रखा उसमें घी डाला, अन्दर से आवाज आई फकीर ठहरो, सब्जी मैं डालूंगा और वह चौके में आकर बैठ गये। उन्होंने एक मिनट में मुझे पचास हुकम दिये—नमक लाओ, मिर्च लाओ, हल्दी लाओ, मसाले लाओ, वह हल्दी लाने को कहें और मैं हल्दी के लिए हाथ बढ़ाऊँ तो तब तक मुझे तीन हुकम और आ जाये मैं घबरा गया, कोई चीज न दे सका खैर देगची में घी पड़ा हुआ था उसमें आग लग गई। उन्होंने सब्जी डाली और ढकना रख दिया, आप चले गये। मैं इन्तजार करता रहा कि मुझसे पूछेंगे कि अन्दर मैं तुमने

क्या देखा ? मैं कहूँगा कि मैंने अन्तर में यह देखा, वह देखा, वह देखा । शाम को मैं सेवा कर रहा था मैंने कहा महाराज, मेरा इम्तिहान नहीं लिया आपने, कहने लगे तुम्हारा इम्तिहान लिया मगर तुम फेल हो गये । मैंने कहा क्यों फेल हो गया ? क्या इम्तिहान लिया आपने ? कहने लगे सुबह मैंने तुमसे कहा कि इतनी चीजें दो मुझे, मगर तुमने कोई चीज़ नहीं दी मुझे । मैंने कहा कि आपने इतनी जल्दी कहा कि मैं घबरा गया । मुझे हँसकर कहते हैं अरे बेवकूफ़, न घबराना ही फ़कीरी है । फिर उन्होंने गुरु नानक साहिब की मिसाल दी कि गुरु नानक सच्चे फ़कीर थे । खम्बे साहिब पर जब पहाड़ ऊपर से गिरा—यह लोगों का विश्वास है कि उन्होंने पहाड़ को रोका जबकि पहाड़ को तो वहाँ ठहरना ही था मगर उनमें इतना हौसला था कि वह वहाँ से उठकर भागे नहीं वहीं बैठे रहे । तो सन्तमत का मतलब क्या है ? निरभौ, निर्वैर, अकाल मूरत, अजूनी सैभं । हम पर दुःख-सुख आते हैं कौन है जो दुःख-सुख से बरी हो, सब के दुःख हैं और यह दुःख सभी आदमियों को सहने पड़ते हैं ;—

नाम फ़कीर धरायो तूने, हो फ़कीर अब साँचा ।
जैसा नाम तो गुण भी वैसा, मन कर्म सहित सुबाचा ।।

दाता ने १९२१ में यह शब्द मेरे नाम लिखे हैं । वह कहते हैं कि तूने अपना नाम फ़कीर रखवाया तो तू अब फ़कीरी का काम कर ।

जैसा नाम तो गुण भी वैसा, मन कर्म सहित सुबाचा ।

आप कहते हैं कि जैसा नाम है वैसा कर्म कर, मन से, वचन और कर्म से ;—

है फ़कीर का नाम पियारा, मैं फ़कीर का दासा ।
तन मन धन फ़कीर पर वारूँ, बसूँ सुसंग सुबासा ।।

से मोह है वह ऊँचा जा नहीं सकता। इसवास्ते सन्तों का मार्ग आम दुनिया के लिए नहीं है इसीलिए गुरु नानक साहिब ने कहा है "नानक कोटिन में कोऊ नारायन जिन्ह चीन्ह"। आगे :—

जो फ़कीर का दर्शन पाऊँ, चरन सरोज पखारूँ।
आप तरूँ उसकी शरनाई, और को संग तारूँ॥

कहते हैं जो असली फ़कीर है यदि मुझे दर्शन दे दे तो मैं उसके चरण पखारूँ, उसके पैर पूजूँ। आप भी तरूँ और दूसरों को भी तार दूँ :—

साधु की संगत गुरु की सेवा, सहज ही काम बनावे।
जिस पर साध की दृष्टि पड़ गई, फिर जग योनि न आवे॥

अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ फ़कीर चन्द ! सत्संग कराता है कुष्ठी होकर मरेगा अगर तू सन्तों की हाँ में हाँ मिलायेगा। क्या तुमको वह चीज़ मिल गई ? हाँ ! मगर यह Subject मातहत है उस परमतत्त्व के, क्या पता मरते वक्त मेरा क्या हाल हो। इस वक्त तो मैं राज़ को समझ गया मैं मोह में नहीं फँसता, न पैसे के मोह में, न दौलत के मोह में, न इज़्ज़त के मोह में। अगर मैं इस बात को पर्दे में रखता जिस तरह से मेरा रूप लोगों में प्रकट होकर उनकी मदद करता है अगर मैं चाहता तो लाखों रुपया कमा जाता, लोगों को अज्ञान में रखकर जितना चाहे मर्ज़ी पैसा ले लेता और लोग दे देते :—

तरवर सरवर मेघ का पानी, औरों को सुखकारी।
तैसे ही सुन मेरे फ़कीरा, साधु परउपकारी॥

वह कहते हैं तरुवर, सरोवर, बारिश का पानी दूसरों को फ़ायदा पहुँचाता है। दरिया बहता है अपने लिए नहीं बहता है, लोग पीते हैं, खेती में पानी देते हैं। वृक्ष फल

देता है आप तो खाता नहीं दूसरे खाते हैं, बारिश पड़ती है दूसरों के लिए फ़ायदेमंद होती है। उन्होंने यह मिसाल दी है कि जो फ़कीर होता है वह ऐसा होता है। मैं पूरी तरह से फ़कीर बनने की कोशिश करता हूँ मगर सौ-फीसदी भी अभी मुकम्मिल तरह से फ़कीर नहीं बना हूँ मगर ९८ फीसदी ज़रूर हूँ :—

तू फ़कीर बन तू फ़कीर बन तू फ़कीर बन भाई।
मुझको कहते हैं कि तूने अपना नाम फ़कीर चन्द लिखाया तो तू ऐसा फ़कीर बन जा जैसी इसकी शर्तें हैं :—
मैं भी तरूँ फ़कीर चरन लग, ऐ फ़कीर ! सुखदाई ॥

कहते हैं कि तू फ़कीर बन जा ताकि मैं तेरे चरण लगकर तर जाऊँ :—

सुनले कथा सुनाऊँ तुझको, प्रगटे विमल विवेका।
जीव अनेक रहें जग अन्दर, पर फ़कीर कोई एका ॥

हज़ारों आदमी यहाँ फिरते हैं, सैकड़ों गुरु नज़र आते हैं, वह कहते हैं कि फ़कीर कोई एक आध ही होता है।

पहली कथा

गंगा तट कोई साधु आया, बिच्छू पानी मँझारा।
तड़प जो देखी इसकी उसने, हाथ से उसे निकारा ॥

फ़कीर के लक्षणों की तीन मिसालें दी हैं उन्होंने। वह कहते हैं कि गंगा तट पर साधु आया, एक बिच्छू पानी में डूब रहा था। साधु ने जब बिच्छू का डूबते हुए देखा तो उसने उसे निकाल दिया :—

बिच्छू ने उसे डंक से मारा, हाथ में उपजी पीरा।
साधु ने कुछ बुरा न माना, संत मन चित गम्भीरा ॥

साधु ने बुरा नहीं माना कि मैंने इसे निकाला और

इसने मुझे डंक मार दिया :—

बिच्छू फिर पानी में आया, इसने उसे बचाया।
फिर बिच्छू ने डंक से मारा, साधु नहीं पछताया ॥

साधु ने फिर निकाल दिया और उसने फिर डंक मार दिया मगर साधु ने अफ़सोस नहीं किया :—

तीजे बार गिरा वह पानी, इसने पकड़ निकारा।
बिच्छू का स्वभाव सब जानें, डंक से फिर भी मारा ॥

तीसरी बार वह फिर पानी में गिरा और साधु ने उसे फिर पकड़ कर निकाला :—

साधु पकड़ किनारे लाया, हाथ सूज गया भाई।
यह लीला कोई देखी नारी, साधु ढिग वह आई ॥
बोली क्या तू है अज्ञानी, जो बिच्छू नहिं जानी।
उसे उठाकर क्यों बाहर किया, बिच्छू विष की खानी ॥

वह औरत कहती है कि तू बेवकूफ़ है तुझे पता नहीं कि यह बिच्छू है :—

हँसा साधु सुन सुन्दर माई, मैं नहीं निपट अनारी।
मैं हूँ साध साध मत मेरा, पर हित पर उपकारी॥
बिच्छू तजे स्वभाव न अपना, मैं अपना क्यों त्यागूं।
वह जब निज स्वभाव में बरते, क्यों परहित नहीं लागूं ॥
माई ने जब सुनी तो बोली, धन्य साधु की लीला।
सुवचन सुमन सुकर्म है साधु, सुरस सुभाव सुशीला ॥

साधु अच्छा वचन बोलते हैं, अच्छा कर्म करते हैं, अच्छी बात कहते हैं :—

पर दुःख हरन विभंजन त्रय तप, हितकारी सुख देवा।
धन्य जगत में वह नर प्रानी, करें जो साधु की सेवा ॥
मैं हूं पारवती परवत की, शिव की निज अरधंगी।
तू है शिव का पुत्र गुसाईं, सुचित सुसाध सुअंगी ॥

वह मुझे समझाते हैं कि यह साधु के लक्षण हैं, तुझे यह काम करने हैं अगर फकीर बना है तो :—

धन्य धन्य तू धन्य धन्य है, धन्य गनेश की मूरत।
जो कोई तेरा दरसन पावे, धरे दया की सूरत॥
अन्तरध्यान भई वह देवी, साधु मन हरषाया।
फर उपकार की महिमा भारी, सती का दर्शन पाया॥

दूसरी कथा—

दूजी कथा सुनाऊँ फकीरा, कान इधर ला भाई।
मैं फकीर का प्रेमी सेवक, त्याग हृदय दुचिताई॥
साधु कोई नौका चढ़ बैठा, संग में नर बहुतेरा।
दुष्ट अभागी देखके साधु, उपजा क्रोध गम्भीरा॥
हँसी उड़ाया धूम मचाया, मारा सिर पर लाठी।
फूटा सिर साधु का भाई, साजा साज कुठाठी॥
हुई अकाशबानी तब ऐसी, साध हैं मुझको प्यारे।
मैं साधु का सहज सनेही, छिन पल का रखवारा॥
उलटू नाव डबाऊँ सबको, यह अनर्थ नहीं भावे।
क्यों कोई अपराधी बनकर, मेरा साध सतावे॥
बानी सुनकर साधु दुःखी भया, बोला चतुर सुजाना
तू दयालु है मेरा साई, अगम अनाम अमान
जीव निबल अज्ञानी मूरख, माया फँद फँ
यह नहीं समझें सार तत्त्व को, भूल भरम भ
दया दृष्टि कर इन्हें चितादो, भाव जत
मेरे जैसा उन्हें बना दे, दया का दे

वह मुझे बता रहे हैं यह साधु के
बनकर तुम्हें क्या करना है ? Wh

साधु संग का फल नही हानी, लाभ साध संग स्वामी।
मेट भरम अज्ञान जीव का, चरन सरोज नमामी ॥
फिर अकाशबानी भई दूजी, एवमस्तु सुन प्यारे।
ले तेरे छिन मात्र की संगत, यह जावें भव पारे ॥
दुष्ट हृदय पछतावा आया, साध चरन लग रोया।
साध ने अपने अंग लगाया, पल में दुर्मति खोया ॥
सुन फ़कीर होजा फ़कीर अब, रूप संभारे अपना।
जग में प्रानी तेरे रूप में, मेट दे उनका तपना ॥

तो मैं करता क्या हूँ ? मेरे पास दुःखी आते हैं उनको सहारा देता हूँ, हौसला देता हूँ। जो विश्वास करते हैं उनके काम हो जाते हैं :—

तेरा रूप है अद्भुत अचरज, तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत् में आया, परम दयाल सनेही ॥

मेरा नाम दाता ने रखा था 'परम दयाल' :—

तीसरी कथा—

तीजी कथा सुनाऊँ तुझको, सुन सुनकर चितलाना।
कथा नहीं यह और की प्यारे, तेरी कथा सुनाना ॥
हरगोबिन्द को कैद में डाला, जहाँगीर ने भाई।
ले ग्वालियर किले में फाँसा, हुआ निपट दुखदाई ॥
मियाँ मीर ने उसे चिताया, छोड़ फ़कीर को छिन में।
नहीं तो उलटे राज यह तेरा, एक रात एक दिन में ॥
जहाँगीर ने हुकुम सुनाया, हरगोबिन्द को लाओ।
यह बोले मैं कैद न छोड़ूँ, कितना करो उपाओ ॥
मैं फ़कीर हूँ देह बंध में, जीवों के हित आया।
सात हज़ार छोड़ दे कैदी, उपजी मन में दाया ॥
बादशाह ने सबको छोड़ा, तब यह बाहर आये।
आप छुटे औरन को छुडाया, दया का साज सजाये ॥

यह इतिहासिक कथा पुरानी, चरित पुनीत सुहावन ।
मन रंजन मन चेत बढ़ावन, मन भावन मन पावन ।।
देह के बंध फ़कीरा आवें, बंध निरबंधन सोई ।
बंधकर बन्धुवे जीव छुड़ावें, समझे यह गति कोई ।।
तू तो आया नर देही में, धर फ़कीर का भेसा ।
दुःखी जीव को अंग लगाकर, लेजा गुरु के देसा ।।
तीन ताप से जीव दुःखी हैं, निबल अबल अज्ञानी ।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी ।।

मैं जो कुछ कहता रहता हूँ, यह मेरा नामदान है। मैं जीवों को अन्दर बिठा करके नाम नहीं देता। क्या फ़ायदा नाम देने का ? यहाँ आते हो मांस भी खाते हो, शराब भी पीते हो, हालाँकि तुम्हारे गुरुओं ने मांस खाने के लिए, शराब पीने के लिए, किसी को दुःख देने के लिए मना किया है। फिर भी तुम औरतों को दुःखी करते हो, औरतें तुम्हें दुःखी करती हैं, बेटे बाप को दुःखी करते हैं, बाप बेटों को दुःखी करते हैं फिर तुम कहते हो कि हम सत्संगी हैं। कहाँ के सत्संगी ! सब झूठ है, बकवास है :—

नाम फ़कीर धरा जब तू ने, काम फ़कीर का कर ले ।
गुरु की दया साथ ले अपने, भक्ति की झोली भर ले ।।
तू इराक से अब के आया, सत संगत के कारन ।
ले प्रसाद यह सत संगत का, होजा भव निधि तारन ।।
राधास्वामी दया के सागर, होंगे तेरे सहाई ।
फ़ुक्र में उतरे साँच फ़कीरा, सब की करे भलाई ।।

तो आज इतना ही सत्संग था। तुम भी फ़कीर बनो बहुत नहीं अपने ही घरों में फ़कीरी इख़्तियार करो, दुनिया को छोड़ो घरों में शान्ति से रहो, प्रेम से रहो, मोहब्बत से

रहो। अगर तुम अपने घरों को बहिश्त बना सको तो तुम जैसा और कौन मुबारिक है। जंगल में रहने वाले साधु क्या करेंगे। लड़का स्कूल में पढ़ता है उसका इम्तिहान होता है। वह क्यों होता है? क्योंकि उनसे उनको उत्साह मिलता है। हम गृहस्थी हैं, हम सुबह से शाम तक under charge रहते हैं तो हौसला और हिम्मत कहाँ से हो। मैं क्या करूँ मेरे बस कुछ नहीं। आप लोग सन्तमत की ऊँची तालीम के तो अधिकारी नहीं हैं, मगर दुनिया के तो अधिकारी हैं उनका अधिकार यह है Less Sex (ज्यादा विषय मत कमाओ) यह बात मुझे शोभा नहीं देती, मेरी उमर ऐसी है, मैं आदमी हूँ। मैं आपके सामने, औरतों के सामने साफ बात कह देता हूँ। दुनिया में जितनी औरतें, जितने शख्स हैं चाहे वह जानवर हैं चाहे Insects हैं, Animals हैं, पंछी हैं, कोई हैं वक्त से पहले कोई भी मादा नर को अपने पास नहीं आने देती और न नर ही मादा के पास जाता है। मगर एक इन्सान है जो न रात देखता है, न सुबह देखता है, न शाम देखता है, न वक्त देखता है इसलिए वह तकलीफ़ उठाता है पीछे से बीमारियाँ, मुसीबतें और निकम्मी औलाद होती है बात सच्ची कहता हूँ क्योंकि मेरे ज़िम्मे duty है, घर में शान्ति रखो। बच्ची! चार पैसे जमा करो परदेश में आये हो फिजूल खर्च मत करो Economy करो। उस चीज़ को खरीदो जिस चीज़ के बिना तुम्हारा गुज़ारा नहीं है। अगर ऐसी चीज़ खरीदते हो जिसके बग़ैर तुम्हारा गुज़ारा है तो तुम ग़लती पर हो। सदा एक से दिन नहीं रहते। समय होता है जब आदमी का भाग्य जागता है, कोई १५ साल, कोई २५ साल, सारी उमर कोई एकसा नहीं रहता। क्या मैं सारी उमर जवान रहा? लाखों रुपये मैंने कमाये, क्या मैं

अब कमा सकता हूँ ? नहीं। तुम गृहस्थियों को मैं As a फ़क़ीर कहता हूँ Less sex जहाँ तक हो सके औलाद पैदा करने के लिए ही औरतों के पास जाओ। जिस नीयत से जाओगे और माता-पिता की जैसी नीयत होगी उसका प्रभाव बच्चे पर पड़ेगा। यह मैं क्यों कहता हूँ ? क्योंकि मेरा तजुर्बा है एक अपने घर का और एक दूसरों के घर का। मैं बंगलौर से आया Military में था मैं लाहौर आया वहाँ मेरा एक शागिर्द राम प्रकाश था, वह गीता पढ़ता था। वह और उसकी औरत आई मेरे दिल में था कि मैं अपनी गद्दी किसी को दे जाऊँगा तो मैंने केला मत्थे से लगाया और उस औरत को दिया कि तेरे लड़का होगा उसका नाम शहिदयाल जग रखना, लड़का लायक निकलेगा। मेरी नीयत यह थी कि लड़का लायक निकलेगा तो मैं उसको तालीम देकर अपनी गद्दी दे जाऊँगा। तो मैंने शर्म के मारे कुछ हिन्दी में और कुछ अंग्रेज़ी में उनको कहा कि जब बच्चा पेट में हो तो तुम आपस में संयोग मत करना। मैं चला गया पीछे लड़का पैदा हुआ। मैं बाहर खड़ा था डाकिया डाक लेकर आया। डाक मैंने पढ़ी मुझे इतनी खुशी हुई जिसका कोई हिसाब नहीं। मैंने उसी वक़्त साईकल पकड़ी और अपने साले के यहाँ चला गया। वह बच्चा भी था और ज्योतिषी भी था। मैंने उसको कहा कि ऐ-२ लड़का पैदा हुआ है इसका टेवा बनाओ। उसने टेवा बनाया और कहा कि इसको बृहस्पति लग्न है, यह बड़ा आदमी बनेगा मगर पहली उमर में यह खराब हो जायेगा। मैंने कहा कि यह खराब नहीं होगा। वह कहने लगा कि ज्योतिष यह कहता है कि यह खराब होगा। मैं शिवरात्रि पर दिल्ली आया। वह लड़की भी मेरे सामने गोद में बच्चा लिए बैठी

मिलता है। शारीरिक दुःख थोड़े समय के लिए रहता है और जिस मनुष्य को ऐसा दुःख होता है वह कुछ ही मिनटों के बाद उसे भूल जाता है। किन्तु जब किसी व्यक्ति को कठोर या क्रोध वाले शब्दों से दुःखी किया जाता है तो वह दुःख शारीरिक दुःख के मुकाबले में ज़्यादा देर तक रहता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि शब्द सूक्ष्म हैं और उनमें मानसिक या शारीरिक लाभ अथवा हानि पहुँचाने की ज़्यादा शक्ति रहती है। शब्द कर्म को भी जन्म देते हैं और क्रोध को भी जन्म देते हैं जिसकी वजह से मनुष्य कभी-२ हिंसा पर और हत्या पर भी तुल जाता है। इसलिए अपने शब्दों के प्रति सावधान रहो और हर समय मधुर और मृदुल भाषा में बातचीत करो। सच्चाई को भी मीठे शब्दों में कहा जाना चाहिए। शब्द चुनने के लिए हमें कोई मूल्य नहीं देना पड़ता। मधुर भाषा के इस्तेमाल करने में कंजूसी मत करो और इस तरह से जगत् में मुसीबत और शोक के स्थान पर प्रसन्नता और उल्लास को बढ़ावा दो।

शब्दों या क्रोध के मुकाबले में (जिसे कमी-२ हालत को सुधारने में भी इस्तेमाल किया जाता है) संकल्प या विचार इसलिए ज़्यादा महत्त्व रखता है क्योंकि इसी से ही भाषा का जन्म होता है। एक बच्चे के व्यवहार को सुधारने के लिए शायद माता के लिए यह ज़रूरी हो सकता है कि वह कठोर शब्द कहे किन्तु किसी भी माता को यह अधिकार नहीं है कि वह अपने बच्चे के बारे में दुर्भावना रखे। विचार भाषा का बीज है और भाषा कर्म को पैदा करती है। यदि आपका विचार शुद्ध, बढ़ावा देने वाला और प्रेममय है तब आपकी भाषा निश्चित रूप से संयम वाली होगी और आपका कर्म हमेशा किसी को भी हानि पहुँचाने वाला

न होगा। अगर विचार बीज है और उससे पैदा होने वाली भाषा और भाव एक वृक्ष का तना और शाखाएँ हैं तो सुख और दुःख पैदा करने वाला कर्म उसी वृक्ष का फल है। इसलिए शुभ संकल्प हमेशा निष्काम कर्म को जन्म देगा। प्रेम और शुभ संकल्प से किया गया कर्म ९९% घटनाओं में उस व्यक्ति को लाभ ही पहुँचायेगा जिसके लिए वो कर्म किया जा रहा है। शायद ऐसी मिसालों में शुभ संकल्प पर आधारित एक प्रतिशत कर्म ऐसा भी हो सकता है जो बिना आपकी इच्छा के किसी को हानि पहुँचा सकता है किन्तु ऐसा कर्म करने वाले को किसी बुरे परिणाम से नहीं बांधेगा। इसलिए आप बीज की तरफ ध्यान दीजिये, विचार और संकल्प को संभालिये, तो भाषा और कर्म अपने आप सुधर जायेंगे।

कोई भी कर्म अपने आप में न शुभ है न अशुभ है। यदि कोई कर्म प्रेम से और शुभ संकल्प से प्रेरित होकर किया जाता है वो शुभ होता है। जब वही कर्म नफ़रत, ईर्ष्या, लोभ, स्वार्थ और बदला लेने की भावना से किया जाता है वो आरम्भ में और परिणाम में हमेशा अशुभ होगा। एक कीटाणु इसलिए हानिकारक होता है क्योंकि वह छूत की बीमारियाँ पैदा करता है। चेचक के कीटाणु आमतौर पर व्यक्ति में ऐसी खतरनाक बीमारी पैदा कर देते हैं जिससे कभी-२ व्यक्ति का हमेशा के लिए अंग भंग हो जाता है। और मृत्यु भी हो सकती है। किन्तु जब चेचक के कीटाणुओं को एक विशेष विधि में ठण्डा करके चेचक के टीके का रूप दे दिया जाता है तो वही कीटाणु मनुष्य को बीमारी से बचा देते हैं। इसी तरह से जब हम अपनी भाषा और कर्मों को प्रेम और सद्भावना का पुट दे देते हैं

तो वो कर्म हमें रूहानियत में ऊपर उठाकर ले जाते हैं और अन्त में मोक्ष भी दिला सकते हैं। यही कारण है कि शिवसंकल्प का नियम उस सत्संगी के लिए पहला क़दम है। जो सद्गुरु से नामदान लेना चाहता है।

सतनाम की इस व्याख्या को अगले मासिक संदेशों में दिया जायेगा यहाँ मुझे इतना कहना है कि इस बार के सत्संग के दौरे में मुझे हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र के ऐसे हजारों सत्संगी मिले जो शिवसंकल्प की परीक्षा में सफल माने जा सकते हैं। रामगढ़ से हिसार की तरफ जाते हुए हम श्री विजय नरेश नेगी के निवास स्थान पर दो घण्टे से भी अधिक इसलिए देरी से पहुँचे कि रास्ते में सड़क खराब थी। हिसार के सैकड़ों सत्संगी हमारे पहुँचने की ज़बरदस्त प्रतीक्षा कर रहे थे। ये सत्संगी हिसार के सभी सामाजिक स्तरों से सम्बन्ध रखते थे और वे सब काफी लम्बी प्रतीक्षा के बावजूद भी मुझे मिलकर और सत्संग सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। हजूर सन्त ताराचन्द जी महाराज अपने कुछ भक्त शिष्यों के समेत मेरे से पहले ही वहाँ पहुँच चुके थे। यह बात यहाँ बताने के योग्य है कि पिछला बार इसी हिसार में मुझे एक ऐसा नवयुवक मिला था जिसने सिर्फ़ संकल्प और विश्वास के कारण अपने मन की शक्ति का सबूत दिया था। उसने मेरे रूप को प्रकट करके उससे सुरत-शब्द योग की ऊँची अवस्था को प्राप्त कर लिया था। जब कि मुझे इस बात का तनिकमात्र भी ज्ञान नहीं था। आश्चर्य की बात तो यह है। उसने मुझे इस अनुभव से पहले कभी देखा भी नहीं था उसने मुझे बताया कि वह कई वर्षों से परम दयाल जी महाराज के सत्संग सुनता रहा था और उनके रूप पर ध्यान भी लगाता रहा

था। मुझे मिलने से एक महीना पहले उसने ऊपर दी गई घटना का अनुभव किया और मेरे रूप को परम दयाल जी के रूप से प्रकट होते हुए देखा था। हिसार इसलिए आया था ताकि वो इस बात की जाँच कर ले कि उसने जो रूप देखा था वह मेरा ही था कि नहीं। न मुझे अपने आपको धोखा देना है न ही आपको धोखा देना है। मैं बिल्कुल सच कह रहा हूँ कि यह सब कुछ उस नवयुवक के विश्वास का परिणाम था। मैंने उसके लिए कुछ भी नहीं किया था।

मेरे प्यारे विजय नरेश नेगी और हजूर सन्त तारा चन्द जी महाराज ने मिलकर के दिनोद, हिसार, भिवानी और सिरसा में सत्संगों का आयोजन किया था। इन सत्संगों पर हज़ारों सत्संगी और नागरिक बड़े चाव से आये।

भादरा राजस्थान और सूरतगढ़ के दो सत्संगों के अलावा राजस्थान का दौरा बहुत सफल रहा। टैगोर पब्लिक एकेडैमी सूरतगढ़ के निर्देशक श्री सुशील जेतली और हमारे पुराने सत्संगी श्री सुन्दर दास के प्रयास से सूरतगढ़ के सत्सग में गंगानगर और दूसरे निकटवर्ती शहरों के लोगों ने भी लाभ उठाया। हमारा चूरू राजस्थान का दौरा ऐतिहासिक साबित हुआ। चूरू, बिसाऊ और दांदू के गाँव में सत्संग देने के अलावा मैंने चूरू शहर में सिविल लाइन के निकट मानवता मन्दिर की नींव रखी। श्री हीरा राम ने दो एकड़ से भी अधिक इस भूमि को सात वर्ष पहले परम दयाल जी महाराज को मानवता मन्दिर के निर्माण के लिए भेंट कर दिया था। चूरू के श्री पन्ना लाल जो गार्ड के माध्यम से नींव रखने की यह रस्म पूरी की गई।

इससे आगे के सत्संग के दौरे में एक सत्संग राजनगर गाज़ियाबाद में और तीन सत्संग मोदी नगर में दिये गये। श्री S. D. Sharma और उनके साथियों के सफल प्रयास

ने सत्संगों का आयोजन मोदी इण्टरमीडिएट कालिज के गीता भवन में किया गया। जिसके फलस्वरूप सैकड़ों सत्संगियों ने और मोदी नगर के बुद्धिजीवियों ने सत्संगों में भाग लिया।

पहले की तरह तीन और चार अक्टूबर को सलवान पब्लिक हाई स्कूल देहली में परम सन्त फ़कीर सम्मेलन आयोजित हुआ। इस बार सत्संगियों के विश्वास और श्रद्धा का पारावार नहीं था। जिस उत्साह और ध्यान से सत्संगियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया उससे यह ज़ाहिर था कि उनका परम दयाल जी में अटूट विश्वास पहले से भी बढ़ गया था। एक साल से भी ज़्यादा अर्सा पहले अहेरी महाराष्ट्र में हमारे आन्ध्र प्रदेश के पुराने सत्संगी श्री कमलेश्वर राव ने अन्तर्राष्ट्रीय मानवता परिषद् की स्थापना की थी। मुझे पिछले वर्ष भी इस संस्था के उद्घाटन के लिए और सत्संग देने के लिए आमन्त्रित किया गया था। इस अक्टूबर के दौरे में मैंने इस कर्त्तव्य को पूरा किया। इस आयोजन के बारे में अगले मासिक सन्देश में पूरा ब्यौरा दिया जायेगा। ऐ मेरे प्यारे सत्संगियो! इन शब्दों के साथ मैं सच्चे दिल से चाहता हूँ कि आपको स्वास्थ्य, सम्पत्ति, शान्ति और पूर्णता मिले।

सबको राधास्वामी!

आपका फ़कीरमय
मानव

नोट :—हज़ूर दाता दयाल जी कहा करते थे :—
संसार और कुछ नहीं है सिर्फ़ मेरा और तेरा संसार है। मुक्ति और कुछ नहीं है, मेरेपने और तेरेपने को मिटा देने का नाम मुक्ति है।

जनरल सेक्रेटरी

(गतांक माह नवम्बर अंक के पृष्ठ 64 से आगे)

ऊपर दिये गये विवेचन को अगर तुलनात्मक दृष्टि से समझने की कोशिश की जाये तो नीचे दिये गये कथनों का समझना लाभदायक होगा। भौतिक जगत् में शक्ति के अविनाशी होने की धारणा ईश्वर के सर्वव्यापी होने की धारणा से मेल खाती है। कारणता में प्रकृति के समरूप होने का सिद्धान्त जिसके आधार पर गणित के असूल प्रकृति में सौ-फीसदी लागू हो रहे हैं इस बात की ओर इशारा करते हैं कि ईश्वर की सर्वव्यापकता और सर्वज्ञता दोनों प्रकृति में काम कर रही हैं। यह स्थाणु या न चलने वाले चालक की धारणा शायद इस बात का समर्थन कर सकती है कि यह न चलने वाला चालक यन्त्र के अन्दर बैठा हुआ कोई भूत-प्रेत है किन्तु ऐसी बात नहीं। हमने जो निरपेक्ष गति को निरपेक्ष स्थिति कहा है, वह विज्ञान की उस खोज के मुताबिक है जिसके परिणाम आज के वैज्ञानिकों ने निकाले हैं। आजकल के विज्ञान में देश, काल, रफ्तार और गति की जो धारणाएँ आणविक भौतिक शास्त्र में और ब्रह्माण्डी भौतिक शास्त्र में स्वीकार की गई हैं वे सब हमारे इस दृष्टिकोण को सच्चा साबित करती हैं। इसलिए इस लेख में यह बताया गया है कि ईश्वर के सर्वज्ञ होने की गत्यात्मक क्रिया जो कि परमतत्त्वरूपी ईश्वर की तीन क्रियाओं में से एक है इस बात को साबित करती है कि न चलने वाला चालक कोई मनुष्य जैसा प्राणी नहीं है। यहाँ पर चालक का अर्थ वास्तविक अस्तित्व की वह हालत या अवस्था मात्र है जिसके बिना हम गति की अवस्था को और गति की रफ्तार की मात्रा को कभी भी नहीं समझ सकते।

ईश्वर के रूप में परमतत्त्वाधार सर्वव्यापक होते हुए भी जगत् से परे इसलिए है कि उसकी सर्वशक्तिमत्ता,

जब विज्ञान के दार्शनिक नई से नई खोजों के आधार पर वेदों की पञ्चपर्वा विश्वविद्या को पुष्ट कर रहे हैं तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी कि मानव के स्वरूप के सम्बन्ध में भी वह उस व्याख्या को स्वीकार करेंगे जिसके आधार पर मनुष्य को ब्रह्माण्ड का प्रतिरूप माना गया है।

विश्व और मानव के सम्बन्ध में वैज्ञानिक और धार्मिक खोजों के तुलनात्मक अध्ययन से हमें यह सबक मिलता है कि हम अपना आख़िरी फ़ैसला नहीं दें। विज्ञान इस दिशा में अपने निष्कर्षों को अन्तिम नहीं मानता। वह इस बात को स्वीकार करता है कि पूर्ण सत्य को जानने में बुद्धि और प्रत्यक्ष ज्ञान असमर्थ हैं। फिर भी ऊपर दी गई व्याख्या से हमें मजबूरन यह कहना पड़ता है कि जिस सत्य की खोज विज्ञान या धर्म करता है वह सत्य द्विमुखी नहीं है। विज्ञान और धर्म के अध्ययन में तुलनात्मक खोज की अनुपस्थिति में इन दोनों क्षेत्रों के परस्पर विरोधों को बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत किया गया है। इसी कारण 'अनेकत्व में एकत्व' के उस सिद्धान्त की उपेक्षा की गई है जिसे विज्ञान और धर्म दोनों स्वीकार करते हैं। यहाँ पर ध्यान देने योग्य बात यह है कि मनुष्य के मन में अनन्त ऐसी शक्तियाँ हैं जिनके द्वारा सत्य के अनेक रूपों को समझा जा सकता है। जब वह एकाग्र हो जाता है तब वह शान्त अवस्था में आकर एक ख़ास विचार या उलझन पर आकर टिक जाता है उस समय किसी न किसी तरह वह (मन) ब्रह्माण्डी मन से जुड़ जाता है और विश्वव्यापी चेतना की गहराई से किसी तर्क के रूप में, नतीजे के रूप में या किसी सूत्र के रूप में उस उलझन का सुझाव निकल आता है। मनुष्य का मन उस सूत्र को अथवा सिद्धान्त को प्रकृति की घटनाओं और

ठोस तथ्यों पर लागू करता है। यह सच्चाई कि प्रकृति उस विशेष सूत्र का, सिद्धान्त का हाँ में जवाब देती है और मनुष्य को अपना भेद साफ़-२ ज़ाहिर कर देती है, इस बात को साबित करता है कि प्रकृति और मनुष्य के बीच में कोई न कोई ऐसा ऊँचा तत्त्व है जो इन दोनों के अदृश्य सम्बन्ध को सम्भव बनाता है। यह ऊँचा तत्त्व ऐसा होना चाहिए जो अपनी सच्चाई को कम से कम आंशिक रूप में प्रकृति और मनुष्य दोनों में ज़ाहिर करता हो। हमने यह देखा है कि बाहरी विश्वव्यापी प्रकृति में परमतत्त्व तीन सत्, चित् और आनन्द की क्रियाओं में अभिव्यक्त होता है और ये तीन क्रियाएँ शरीर मन और आत्मा के वह लक्षण हैं जो मनुष्य के भौतिक शरीर, विचार और आत्मिक तत्त्व से मेल खाते हैं। इस तरह से प्रकृति और मनुष्य दोनों इन लक्षणों को उस परमपुरुष ईश्वर से प्राप्त करते हैं जिसमें यह तीनों गुप्त रूप में और अनन्त मात्रा में मौजूद रहते हैं। मनुष्य और प्रकृति में यह तीन लक्षण सीमित दिखाई देते हैं किन्तु अपने उस आधार में जिसमें वे गुप्त रूप में निहित हैं ये तीनों अनन्त होते हैं। अनन्त परमपुरुष अपने स्वभाव से ही ब्रह्माण्डी स्वरूप पैदा करके अपने आपको इस इस प्रकार सीमित कर देता है मानो उसके विचार को एक लहर देश, काल और कारण में फैल जाती है और अन्त में उसकी अपनी बनाई हुई सीमित अभिव्यक्ति को वह परम-पुरुष सीमित से असीम की तरफ खींच लेता है।

मनुष्य और जगत् के दोनों छोरों पर अनन्त है, वे दोनों अनन्त से पैदा होते हैं, परमसत्ता से निकलते हैं, वे देश, कालात्मक जगत् में कुछ समय के लिए प्रकट होते हैं और फिर अन्त में अनन्त में मिल जाते हैं। भगवद्गीता के

अनुसार "आरम्भ में सभी वस्तुएँ गुप्त होती हैं और अन्त में भी वह फिर गुप्त हो जाती हैं। केवल मध्य में ही कुछ समय के लिए वे प्रकट रूप में रहती हैं।"

अनन्त परमपुरुष अपने असल अविनाशी रूप में आंशिक रूप से तथाकथित जड़ वस्तुओं, वनस्पतियों, पशुओं और मनुष्यों में अभिव्यक्त होता है और सत्ता के इन सभी दर्जों के अन्दर ऐसी लहर, एक ऐसी प्रेरणा मानो ऐसी धारा उत्पन्न करता है जिसके कारण ये सभी वस्तुएँ अन्दर से विकसित होती हैं और अन्त में अनन्त रूप से सत्, चित् और आनन्द में विलीन हो जाती हैं।

मनुष्य भौतिक प्रकृति और विश्व से परे आत्मिक परमतत्त्व दोनों के मध्य में रहता है यानि कि उन दोनों का मिश्रण होता है। इसलिए जब मनुष्य अपने ध्यान को कारणता और प्रकृति की समरूपता आदि के सिद्धान्तों को अपनाकर देशकालिक जगत् को समझने के लिए ध्यान लगाता है तो उसकी मानसिक धारणाएँ ऐसी आश्चर्यजनक बन जाती हैं कि उनके द्वारा वह हरकत में रहने वाली प्रकृति को अपने भौतिक आराम का साधन बना लेता है। किन्तु जब वह अपने मन को आध्यात्मिक वास्तविकता की ओर अपने अन्तर में लगा देता है क्योंकि यह आत्मिक तत्त्व बाहरी प्रकृति की जड़ है, उस समय परमपुरुष के सम्बन्ध में वे धारणाएँ जो उसके अपने स्वभाव से पैदा होती हैं वो (मनुष्य) शरीर, मन और आत्मा के समेत आन्तरिक अनुभव की उस परम अवस्था पर पहुँच जाता है जो उसे ईश्वर के समान बना देती है। मानव सीमित प्रकृति और अनन्त ईश्वर के मध्य में मौजूद है। प्रकृति भी परमतत्त्व पर आधारित है। मनुष्य का ऐसी प्रकृति का ज्ञान उसके

अपने उस आपे के ज्ञान के मुताबिक है जो (आपा) वास्तव में विश्वातीत और विश्व में व्यापक ईश्वर से ही निकला है और उसी का सच्चा और वास्तविक रूप है।

इस तरह से वैज्ञानिक खोज की सफलता मनुष्य की कार्यकारणता की धारणा पर आधारित होने से उसे भौतिक जगत् में सफलता देती है। उसकी धर्म सम्बन्धी धारणाएँ उसे अनन्त होने की चेतना उस दिव्य कारणता की धारणा के द्वारा देती है जो हमें बताती है कि परमकारण की व्यापकता और उसका विश्वातीत भाव इस सच्चाई को साबित कर रहा है कि प्रकृति और मनुष्य में कार्यकारणता परमतत्त्व के रूप में ईश्वर पर आधारित है।

नोट :—हजूर दाता दयाल जी कहा करते थे :—

यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि एक चोर बिल्कुल ही बुरा और एक साधु बिल्कुल ही नेक और परहेज़गार हो। बहुत मुमकिन है कि चोर अपनी इस एक खराब आदत को छोड़कर बाकी और बातों में साधु से कहीं अच्छा हो और यह भी हो सकता है कि साधु सिर्फ़ वेशधारी हो और अपने बुरे कामों की वजह से पूरा शैतान हो।

तो.....मेरी भी दीवाली हो जाये

—महेन्द्र नारंग

सन्त दीवाली नित करें, सत-लोक के माहें।
सुन्न महल में दिया बारि लें-जब चाहें।
जब चाहें.....लगाते हैं, आप समाधि.....
और जा पहुँचते हैं सत - लोक,
जहाँ ज्योति ही ज्योति है—अनन्त प्रकाश ही प्रकाश।
जगमगा रहा है.....दीवाली का दिया अविरल।
सच्चे सतगुरु सन्त हैं आप...इसीलिए रोज़ दीवाली मनाते हैं आप
मुझे भी ऐ मालिके गुरु...असत् से सत्य की ओर खेंच।
अन्धेरे से प्रकाश की ओर खेंच.....
मेरे अन्तर जलते दिये को देखने की शक्ति बख्शें...गुरुवर!
इस शरीर में सत्य की जो ज्योति जगमगा रही है.....
उस ज्योति को देखने वाला बना दे गुरुवर!
तो.....मेरी भी दीवाली हो जाये।
अन्धेरा जाये—सतगुरु प्रगटें प्रकाश आये।
अर्ज़ है सतगुरु मालिक कि—हटा दें वो.....
पर्दे—दर—पर्दे।
जिनके पीछे मनाई जा रही है दीवाली—अखण्ड!
और अपने उस 'नूर' के भी जलवे करा दें अनामी!
मैं भी उस 'दीवाली' के 'दिये' की अनन्त रौशनी में
नहा लूँ—समा लूँ मना लूँ दीवाली।
आज तो 'दीवाली है—दीवाली!'

पत्र व्यवहार द्वारा ज्ञान

मेरे प्यारे वैद्यराज महेन्द्र नारंग तुम्हारी कविता मिली, उसे मानव मन्दिर में प्रकाशित किया जा रहा है। तुम एक उच्च कोटि के सच्चे सत्संगी हो और तुम्हारा परम दयाल जी के साथ भी पत्र-व्यवहार रहा है। इस कविता से यह स्पष्ट हो जाता है कि तुम्हारी सुरत तुम्हें सही रास्ते पर ले जा रही है। सुरत प्रश्न है, शब्द उत्तर है। सुरत शिष्य है, शब्द गुरु है। जब तक सुरत शब्द में मिलने से पहले ज़द्दो-जहद करती रहती है और वह प्रश्न उठाती रहती है जब वह अपने मंज़िले-मक़सूद पर पहुँच कर शब्द में समा जाती है तो प्रश्न, उत्तर समाप्त हो जाते हैं। गुरु और शिष्य एक हो जाते हैं।

सुरत शब्द का मेला राधास्वामी अवस्था में बदल जाता है और मनुष्य जीवन्मुक्त अवस्था में पहुँच जाता है। किन्तु जब तक मनुष्य प्रश्न नहीं करता तो उत्तर को प्राप्त नहीं कर सकता है जब तक सुरत जद्दो-जहद नहीं करती वह मंज़िले-मक़सूद पर नहीं पहुँच सकती। जब तक मनुष्य राधा का यानि कि लोक का अनुभव नहीं कर लेता तब तक वह स्वामी को प्राप्त नहीं कर सकता यानि कि परलोक या परमार्थ में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। तुम्हारा प्रश्न उठाना ऐसा है कि तुम स्वयं अपने अन्तस् से उसका उत्तर भी दे देते हो। इससे तुम्हारी रूहानियत की हालत सिर्फ़ ज़द्दो-जहद की नहीं है, सिर्फ़ सुरत की जिज्ञासा की नहीं है बल्कि उसके साथ-२ उस हालत में तुम शान्ति को भी छू रहे हो दूसरे शब्दों में जैसे कि मैंने ऊपर कहा है कि तुम सुरत शब्द के रास्ते पर एक ऊँची अवस्था पर पहुँच

रहे हो। तुम्हारी कविता में उठाये हुए प्रश्नों का उत्तर मैंने इन्हीं पंक्तियों में दिया है। सुखी रहो, आनन्द का अनुभव करते हुए शीघ्र ही जीवन्मुक्त अवस्था को पा जाओ, यही मेरा दिली आशीर्वाद है।

तुम्हारा फकीरमय

मानव

नोट :—१. हज़ूर दाता दयाल जी साधन के अमली सबक के लिए फरमाया करते थे :—

करनी से काम बनता है ज़्यादा बातचीत करने से काम बिगड़ता है। काम में मन लगता है और सुरत जागती है। बातचीत में मन बहकता है और सुरत सो जाती है।

२. सत्संग करते बरसों गुज़र गये दिल की हालत नहीं बदली, तेली के कोल्हू का बैल घर में पचास कोस का चक्कर लगाकर भी जहाँ का तहाँ रहा। यह दिल का हाल है। जो अपने दिल के कहने में लगा वो बुरी तरह से मारा गया और जिसने गुरु के कहने का ख़्याल किया सिर्फ़ वो ज़िन्दा बचा।

३. गुरु दस-बीस बात नहीं कहता उसने कहा तीरघाट चलो। तीरघाट का मतलब है जिस तरह सनसनाता हुआ तीर सीधे एक तरफ होकर निशान पर जाता है इसी तरह आपने एक तरफ, एक दिल और एक चित्त बनना है।

मन कहता है मेरघाट चलो इस मेरघाट में मेरा और पराया है। जो इसके दाँव में आया उसकी रिहाई मुश्किल है। अगर आज़ाद होना है तो गुरु के सिर्फ़ एक वचन में मुक्ति है और अगर बन्धन से फँसना है तो मन की लाखों और करोड़ों उलझनें हैं।

जनरल सेक्रेटरी

परमसन्त परम दयाल
डा० ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज
का टूर विवरण

प्रस्थान तिथि	आगमन तिथि तथा विश्राम स्थान
१. होशियारपुर से २५-१२-८४	देहली २५-१२-८४ सायम्
२. देहली से २६-१२-८४	जबलपुर २७-१२-८४ (विश्राम स्थान) C/o आल इंडिया, फिलासफीकल कांग्रेस यूनोवर्सिटी कैम्पस् ।
३. जबलपुर से ३१-१२-८४	इन्दौर १-१-८५ (विश्राम स्थान) (१) C/o मिडल स्कूल, नज़दीक जूना बिजलीघर—इन्दौर । (२) C/o दयाल पुत्री लीला १३३ धन्वन्तरी नगर ।
४. इन्दौर से ३-१-८५	उज्जैन ३-१-८५, ४ एवं ५ जनवरी तक (विश्राम) C/o बन्सी लाल, द्वारका दास सराफ पटनी बाज़ार, उज्जैन ।
५. उज्जैन से ६-१-८५	देहली ७-१-८५
६. देहली से ८-१-८५	होशियारपुर ८-१-८५ सायम्

सेक्रेटरी मानवता मन्दिर
होशियारपुर ।

हजूर दाता दयाल जी महाराज फ़रमाया करते थे कि जब कभी खुश-किस्मती से तुमको सतसंग का मौका मिल जाये तो जो वचन कहे जायें बहुत गौर और तवज्जो से दिल लगाकर सुनो और सुनकर उन गुणों को सोचो विचारो और ग़ौर करो। फिर उनके मुआफिक अपना जीवन बनाओ वरना सत्संग करना, वचन का सुनना यह सब का सब बेकाम व बेकार है। मसलन तुमको अनाज मिलता है तो अनाज को दाज में या छाज में साफ़ करो, पकाओ, पकाकर खाओ और हृष्ट-पुष्ट हो जाओ। इसी तरह यह सत्संग भी एक किस्म का अनाज है, खुराक है गिज़ा है ख़राक के साथ जिस इज़्ज़त, प्रेम और मुहब्बत का बरताव करोगे वैसे ही वह तुम्हारे दिल को, जिस्म को और दिमाग़ को बनायेगी। अगर इसकी बेइज़्ज़ती करते रहो तो इसी तरह तुम्हारे दिल को, जिस्म को और दिमाग़ को बिगाड़ भी देगी। जब तुम्हारे सामने खाना आता है समझ लो कि सत्पुरुष राधास्वामी का प्रसाद है। खुशी-२ से प्रेम के साथ खाओ, जब वो खाना प्रेम से खाया हुआ अन्दर जायेगा, दिल को, जिस्म और दिमाग़ को ठीक बनायेगा। इसलिए अन्दर जो चीज़ जाये, खुशी से जाये। लेकिन जो लोग इस राज़ को न समझ कर खाना खाते वक्त बीबी की शिकायत खटाई की शिकायत, नमक की शिकायत और शिकायत पर शिकायत करते रहते हैं वो न जाने हुए अपने दिल को बिगाड़ते हैं और बजाय फ़ायदे के नुकसान होता है, यह असूल है। इस बात से सत्संग के वचन को प्रेम से सुनो और आदर से ग्रहण करो फिर ज़िन्दगी बन जायेगी। खासकर राधास्वामी मत का असूल बकवास नहीं है ज़बानी फलसफा नहीं है, बल्कि ज़िन्दगी को अमली बनाना है। ज़िन्दगी को साधो और काम बनेगा। इसलिए मौज से और खुशकिस्मती से जब सत्संग मिले प्रेम से और खुशी से सुनो।

जनरल सेक्रेटरी

नारायण दास डोगरा, मानवता मन्दिर, होशियारपुर।

प्रार्थना

धास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
लख अगम और अनामी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
परम सन्त का रूप धरा, जीवों पर उपकार किया
सीधा सच्चा मार्ग दिया, आये धुर पद धामी
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी
बन कर आये परम फ़कीर, हरने सब जीवों की पीर ।
परम दयालु दानी वीर, नाम दान के दानी
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
राम भी हो और कृष्ण भी तुम ।
म महावीर और बुद्ध गौतम ।
क्षर ब्रह्म और पुरुषोत्तम, सब नामों में अनामी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
नवता का किया प्रचार, निज अनुभव का दे दिया सार ।
ने गुरु को बारम्बार, नमामि नमामि नमामि ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
ाता दयाल के प्यारे तुम, मानव के रखवारे तुम ।
निर्गुण और सगुण भी तुम, सब के अन्तर्यामी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग 16-12-84 को होगा ।

Regd. No. 26265/74 DECEMBER 10th
MANAV MANDIR NWHS

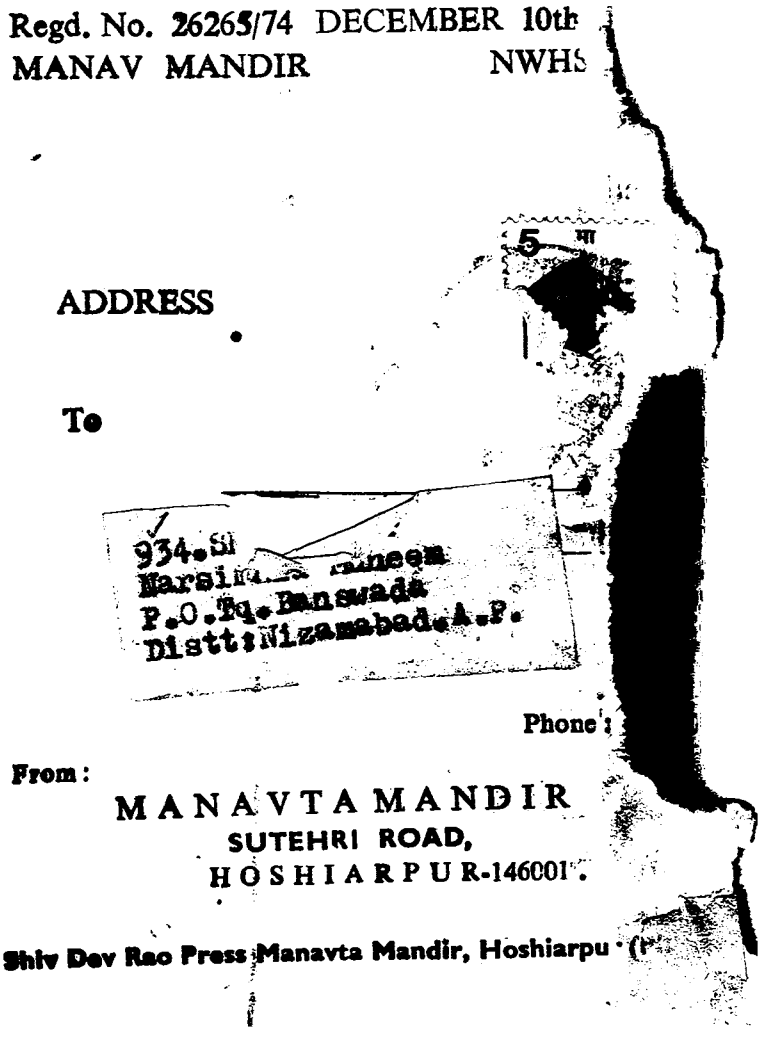

ADDRESS

To

934. Sh ... neem
Narsim...
P.O.Tq.Banswada
Distt:Nizamabad.A.P.

Phone :

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR-146001.

Shiv Dev Rao Press Manavta Mandir, Hoshiarpu (P